IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दलित स्त्री कहानियों में समाज

अमलु पी
शोधार्थी
हिंदी विभाग श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालड़ी,केरला

सार :- दलित स्त्री कहानियाँ सामाजिक असमानता,शोषण और जातिगत भेदभाव को उजागर करती हैं । लये उनके संघर्ष,सहस और अधिकारों की लडाई का चित्रण करती हैं। ये कहानियाँ केवल साहित्य नहीं, बल्कि समाज की सच्चाई का आईना हैं, जो बदलाव और समानता की प्रेरणा देती हैं। क

दलित कहानियाँ उस वर्ग की सच्ची आवाज़ हैं, जिसने लंबे समय तक अन्याय, शोषण और भेदभाव सहा है। ये केवल साहित्य नहीं हैं, बल्कि दलित समाज के भोगे हुए यथार्थ का खुला चित्र हैं। इनमें उनकी पीड़ा, संघर्ष और आत्मसम्मान की झलक मिलती है। इन कहानियों ने साहित्य को नई दिशा दी है और समाज को एक नए दृष्टिकोण से देखने की दृष्टि प्रदान की है।

दलित कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है इनका स्वानुभूति का तत्व। इन कहानियों में लेखक अपने व्यक्तिगत अनुभवों और समाज में देखे गए यथार्थ को पूरी ईमानदारी और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करता है। यह न केवल दलित समाज के दर्द और पीड़ा को उजागर करता है, बल्कि उनके संघर्ष, आत्मसम्मान और चेतना को भी उजागर करता है। दलित कहानियाँ जातिवाद, सामाजिक असमानता और भेदभाव के खिलाफ एक सशक्त प्रतिरोध का माध्यम बनती हैं। यह समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण और भेदभाव का सजीव चित्रण करती हैं। इनमें समाज का वह यथार्थ सामने आता है, जिसे अक्सर मुख्यधारा के साहित्य ने अनदेखा किया।

जातिगत भेदभाव, सामाजिक असमानता,आर्थिक शोषण और दलित वर्ग के संघर्ष को दलित कहानियों ने गहराई से प्रस्तुत किया है।

इन कहानियों का उद्देश्य न केवल समाज में व्याप्त अन्याय और शोषण को उजागर करना है, बल्कि एक नए और समानता पर आधारित समाज की परिकल्पना करना भी है।

अनीता भारती की कहानी *"सीधा प्रसारण"* सामाजिक यथार्थ को गहराई से उजागर करती है। कहानी में मीडिया के माध्यम से समाज में हो रहे जातिगत भेदभाव, अत्याचार और अन्याय को सामने लाने का प्रयास करती है। साथ ही, यह उन परिस्थितियों को दिखाती है, जहाँ दलित वर्ग की आवाजों को दबाने की कोशिश की जाती है।

दलित समाज अपने अधिकारों और न्याय के लिए संघर्षरत है। यह कहानी न केवल दलित जीवन के संघर्ष को सामने लाती है, बल्कि इस सवाल को भी उठाती है कि, क्या मीडिया और समाज सचमुच दलितों के लिए न्यायपूर्ण हैं? । कहानी में भास्कर एक कुशल पत्रकार है। उसके पास दो केस आते हैं – दलित लड़की सुनीता की बलात्कार-हत्या और प्रियंका की आत्महत्या केस। रंजना से भास्कर को पता चलता है कि, सुनीता एक निडर लड़की थी, जो पढ़ -लिखकर कलेक्टर बनने की इच्छा रखती थी।

"असल में यह संपादक के ऊपर है कि इस खबर को कितना वेटेज देते हैं।' रंजना से बात करने के बाद भास्कर को लगा कि सुनीता का केस बहुत ही साधारण है और आज की पत्रकारिता की भाषा में कहें तो 'लो प्रोफाइल' है। गाँवों में ऐसी न जाने कितनी घटनाएँ घटती रहती हैं। अखबारों में कितना और कब तक इनके बारे में छपता रहेगा। सुनीता के साथ बलात्कार करने वालों में अगर कोई नेता, मंत्री या ऊँचे कद का राजनीतिज्ञ शामिल होता तो खबर अच्छी बनती। उसे भी इस तरह के अन्याय

के खिलाफ लिखने में संतोष होता । और भास्कर ने अपने अखबार में सुनीता के बारे में जो खबर बना कर दी, वह कुल सौ-सवा शब्दों की रही होगी, जिसे किसी कोने में जगह मिल जाती तो अखबार की मेहरबानी ही होती। इसके बाद भास्कर ने सुनीता की कहानी को सिरे से झटक दिया और फिर पूरी ताकत से प्रियंका केस में जुट गया।"[1] "सीधा प्रसारण" कहानी वर्तमान समय के मीडिया पर गहरी चोट करती है। यह कहानी दिखाती है कि किस तरह मीडिया का उद्देश्य सूचना और जागरूकता फैलाने से हटकर केवल व्यावसायिक लाभ तक सीमित हो गया है और मीडिया किस प्रकार किसी संवेदनशील विषय को सनसनीखेज बनाकर पेश करता है। समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने के बजाय मीडिया टी.आरपी की दौड़ में शामिल हो जाता है। अनीता भारती ने इस कहानी में न केवल मीडिया की नैतिकता पर सवाल उठाए हैं, बल्कि यह भी बताया है कि समाज के कमजोर वर्गों की आवाज़ कैसे दबाई जाती है। कहानी में एक आम व्यक्ति की त्रासदी को भुनाने वाले मीडिया का दोहरा चेहरा उजागर किया गया है। कहानी में बताया गया है कि कैसे मीडिया अपने प्रभाव का उपयोग कर आम जनता को गुमराह करता है। इस कहानी का उद्देश्य पाठकों को यह समझाना है कि मीडिया को सही दिशा में काम करना चाहिए और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए।

निजीकरण का प्रभाव दलित समाज में गहरा और जटिल है। एक ओर, यह नए रोजगार के अवसर, कौशल विकास, सामाजिक गतिशीलता, और उद्यमशीलता के माध्यम से दलित समुदाय को सशक्त कर सकता है। वहीँ दूसरी ओर, आरक्षण की अनुपस्थिति, आर्थिक असमानता, शोषण जातिगत भेदभाव, और सामाजिक सुरक्षा की कमी जैसे मुद्दे इसे चुनौतीपूर्ण बनाते है। अनीता भारती की कहानी *"बीज बैंक"* में निजीकरण के माध्यम से दलितों के शोषण का सजीव चित्रण किया गया है। निजीकरण के नाम पर दलितों और उनके पारंपरिक कृषि जीवन के साथ धोखा हुआ है। मुनाफे की बात कर उन्हें ऐसे जाल में फंसाया गया है, जिसमें उनकी मेहनत का फायदा केवल उच्च वर्ग के लोग उठाते हैं। वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का दखल बढ़ता जा रहा है। ये कंपनियां मुफ्त बीज, अनुदान और तकनीकी सहायता का लालच देकर किसानों को अपने जाल में फंसा रही हैं। विशेष रूप से दलित और गरीब कृषक, जो आर्थिक और सामाजिक रूप से पहले से ही कमजोर हैं, इनकी चालाक योजनाओं का शिकार बन जाते हैं। कहानी "बीज बैंक" इसी शोषणकारी व्यवस्था की पड़ताल करती है।

गाँव का एक पढ़ा-लिखा और जागरूक दलित नौजवान, मोहन, इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की चालाकियों और शोषणकारी नीतियों को समझने में सफल होता है। वह अपने गांव के किसानों को इन कंपनियों के जाल से बचाने के लिए संघर्ष करता है। "हम अकेले कैसे इतने बड़े जाल को काट सकते है मोहन भइया?" गाँव के लोगों ने अविश्वास से पूछा। मोहन ने आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया "अपना सहकारी बीज-बैंक बनाकर। वह हम सबका बैंक होगा। गाँव के सारे लोग उसे संभालेंगे। गाँव के लोग ही उस बैंक के पदाधिकारी और प्रतिनिधि होंगे। उसमें हम सब अपने-अपने बीजों का कुछ हिस्सा एक जगह उठा कर रख देंगे। जैसे बूंद-बूँद से घड़ा भरता है, वैसे ही एक-एक किसान के थोड़े-थोड़े बीजों से सहकारी बीज-बैंक बन जाएगा, ताकि हमें जब जरूरत हो, तब हम उसमें से थोड़े बीज ले सकें। इस बैंक के तहत हम एक लघु बचत समूह भी चला सकते है। यहाँ हम अपनी पूँजी लगाएँगे, जिसका फायदा सब उठा पाएँगे।"2

यह कहानी किसानों की एकजुटता, जागरूकता और आत्मनिर्भरता का संदेश देती है, साथ ही हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि किस तरह बाहरी शक्तियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था और समाज को नुकसान पहुंचा रही हैं। यह कहानी आधुनिक समय की सामाजिक यथार्थ को उजागर करती है, जहाँ निजीकरण के लाभ मुख्यतः उच्च वर्गों तक ही सीमित रहते हैं। वहीं निम्न वर्गों, विशेष रूप से दलितों, को केवल श्रम के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उनकी मेहनत का उचित मूल्य उन्हें नहीं मिलता, और वे गरीबी और शोषण के दुष्चक्र में फंसे रहते हैं। इस प्रकार, कहानी सामाजिक और आर्थिक असमानता को गहराई से समझने और उस पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

रजत रानी मीनू की कहानी *"हम कौन हैं ?"* समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव पर गहराई से चर्चा करती है। कहानी में यह दिखाया गया है कि सरनेम के माध्यम से जाति का पता लगाने की प्रवृत्ति वास्तव में यह समाज की कटु सच्चाई है। आज भी लोग सरनेम पूछकर जाति पहचानने का यह शॉर्टकट अपनाते हैं।

कहानी में अज्जू, (जिसे "अजातिका" कहा गया है,) का चरित्र इस भेदभाव का केंद्र बिंदु है। स्कूल में टीचर बार-बार उसका सरनेम पूछते हैं ताकि उसकी जातीय पहचान को उजागर कर सकें। स्कूल से वापस आकर अज्जू अपनी अम्मा से पूछते है कि "मम्मी, फिर मेरा सरनेम क्या है? आपने सरनेम क्यों नहीं लगाया, बताओ न? वालंटियर दीदी कह रही थीं 'जो सरनेम नहीं लगाते वे नीची जाति के होते हैं।" जात क्या होती है मम्मी? हमारा सरनेम क्या है? हम क्या हैं, कौन हैं मम्मी?"

अबोध बच्ची के प्रश्न सुन कर उमा भौंचक्का रह गई थी।"3

यह घटना इस बात को स्पष्ट करती है कि मॉडर्न पब्लिक स्कूल, जो समानता और आधुनिकता का दावा करते हैं, वे भी जातिगत भेदभाव से मुक्त नहीं हैं।

दलित समाज को अपनी जातीय पहचान और उससे जुड़े भेदभाव से मृत्यु तक छुटकारा नहीं मिलता। यह कहानी न केवल समाज की मानसिकता पर प्रहार करती है, बल्कि पाठकों को आत्ममंथन करने के लिए प्रेरित भी करती है। लेखिका जातिगत भेदभाव को समाप्त करने और समानता पर आधारित समाज बनाने की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

नीरा परमार की कहानी "वैतरिणी" भारतीय समाज में दलित समुदाय के संघर्ष, सामाजिक असमानता, और राजनीतिक व्यवस्था के खोखलेपन को सामने लाने वाली एक प्रभावशाली रचना है। इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने न केवल डोम समाज की दुर्दशा को उजागर किया है, बल्कि यह भी दिखाया है कि मानवीय गरिमा के बिना जीवन कितना कष्टदायक हो सकता है।

"वैतरिणी" का शीर्षक हिंदू धर्म की उस मिथकीय नदी की ओर संकेत करता है, जिसे पार करने के बाद ही मृत व्यक्ति को मोक्ष मिलता है। लेकिन कहानी में वैतरणी को एक नए अर्थ में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ यह नदी दलित समाज की जीवन स्थितियों और उनके संघर्ष का प्रतीक बन जाती है। यह दर्शाती है कि मोक्ष प्राप्त करने से अधिक महत्वपूर्ण है जीते-जी मानवीय गरिमा के साथ जीवन जीना।

कहानी डोम समाज की व्यथा-कथा है, जो श्मशान भूमि में शवदाह और सामग्री तैयार करने जैसे कार्यों में संलग्न हैं। इनका जीवन समाज के सबसे निचले पायदान पर है, जहां उनके पास बुनियादी जरूरतों, जैसे पानी, भोजन, और शिक्षा का अभाव है।

मंगतुराम और उनके जैसे पात्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करते हुए उस व्यवस्था को चुनौती देते हैं, जो उनकी आवाज़ को अनसुना करती है।

चापाकल की माँग केवल पानी की सुविधा की माँग नहीं है; यह उनके आत्मसम्मान और बुनियादी अधिकारों की माँग है। मंगतुराम का विधायक से कहना, "आप तो दयावान हैं, कुछ पानी का इंतजाम हो जाता तो बस्ती के लोग असीस देते,"4 यह दिखाता है कि वे अपनी आवाज़ सत्ता तक पहुँचाने के लिए कितने मजबूर और असहाय हैं।

कहानी में राजनीतिक व्यवस्था की असंवेदनशीलता और खोखले वादों का पर्दाफाश होता है। दलित बस्ती के लोग अपनी समस्याओं को लेकर बार-बार सरकारी दफ्तरों में जाते हैं, लेकिन उनकी शिकायतें अनसुनी रह जाती हैं। सरकारी योजनाएँ और विकास के दावे उनके जीवन में कोई वास्तविक बदलाव नहीं लाते।

यह दिखाता है कि किस प्रकार सत्ता और प्रशासन केवल चुनावी लाभ के लिए वादे करते हैं, लेकिन हाशिए पर खड़े लोगों के जीवन में सुधार लाने की उनकी कोई वास्तविक मंशा नहीं होती।

राजनीतिक आश्वासनों और विकास योजनाओं का असर दलित समाज पर एक घातक चक्र के रूप में देखने को मिलता है। एक ओर, उन्हें उम्मीद दी जाती है कि उनकी समस्याओं का समाधान होगा; दूसरी ओर, जब इन उम्मीदों पर पानी फिरता है, तो यह उनकी निराशा और हताशा को और गहरा करता है।

कहानी में पानी की समस्या केवल एक प्रतीक है। यह उन तमाम समस्याओं को दर्शाती है, जिनका सामना दलित समुदाय करता है—चाहे वह शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, या सामाजिक सम्मान का अभाव हो।

निष्कर्ष

दलित स्त्री कहानियाँ न केवल सामाजिक अन्याय और भेदभाव के विरुद्ध आवाज़ उठाती हैं, बल्कि यह दलित समाज की संघर्षशीलता, उसकी चुनौतियों और सामूहिक चेतना का प्रतिबिंब भी हैं। इन कहानियों के माध्यम से दलित महिला लेखन ने यह सिद्ध किया है कि वे न केवल अपनी पीड़ा व्यक्त कर सकती हैं, बल्कि सामाजिक बदलाव और न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। यह लेखन न सिर्फ व्यक्तिगत अनुभवों का दस्तावेज है, बल्कि यह समाज को नई दृष्टि और बदलाव के लिए प्रेरित करने वाला सशक्त माध्यम भी है।

संदर्भ :-

1. अनीता भारती, एक थी कोटेवाली तथा अन्य कहानियाँ, पृ. 55

2. अनीता भारती वही,पृ.87

3. रजत रानी मीनू, हम कौन है?, भारतीय दलित साहित्य कथा-कोश, पृ.121

4. नीरा परमार, वैतरणी,समकालीन भारतीय दलित महिला लेखन, पृ.93